"दान मांगो - मांगो निका.....?"

"जिन उपाई मेदनी सोई करदा सार.....!"

1. "गोपाल तेरा आरता" । जो जन तुमरी भगत करंते - तिन के काज सवारता ।

अर्थः- हे पृथ्वी को पालने वाले प्रभु ! मैं तेरे दर का भिखारी हूँ (मेरी जरूरतें पूरी कर); जो जो मनुष्य तेरी भक्ति करते हैं तू उनके काम सिरे चढ़ाता है ।

दाल सीधा मागउ घीउ । हमरा खुसी करै नित जीउ । पन्हीआ छादन नीका । अनाज मगउ सत सी का ।

अर्थः- मैं (तेरे दर से) दाल, आटा और घी माँगता हूँ, जो मेरी जिंद को नित्य सुखी रखे, जूती व बढ़िया कपड़ा भी माँगता हूँ, और सात जोताई वाला अन्न भी (तुझी से) माँगता हूँ ।

गऊ भैस मगउ लावेरी । इक ताजन तुरी चगेरी । घर की गीहन चंगी । जन धंना लेवै मंगी । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 695)

अर्थः- हे गोपाल ! मैं गाय भैंस लावेरी भी माँगता हूँ, और एक बढ़िया अरबी घोड़ी भी चाहिए । मैं तेरा दास धंना तुझसे माँग के घर की अच्छी स्त्री भी लेता हूँ ।

2. तू काहे डोलह प्राणीआ - तुध राखेगा सिरजणहार । जिन पैदाइस तू कीआ - सोई देइ आधार ।

अर्थः- हे भाई ! तू क्यों घबराता है ? पैदा करने वाला प्रभु तेरी (जरूर) रक्षा करेगा। जिस (प्रभु) ने तुझे पैदा किया है, वही (सारी सृष्टि को) आसरा (भी) देता है ।

मिहरवान साहिब मिहरवान । साहिब मेरा मिहरवान । जीअ सगल कउ देइ दान ।

अर्थः- हे भाई ! मेरा मालिक प्रभु सदा दया करने वाला है, सदा दयालु है, सदा दयालु है । वह सारे जीवों को (सब पदार्थों का) दान देता है ।

जिन उपाई मेदनी - सोई करदा सार । घट-घट मालक दिला का - सचा परवदगार ।

अर्थः- हे भाई ! जिस परमात्मा ने सृष्टि पैदा की है, वही (इसकी) संभाल करता है । हरेक शरीर में बसने वाला प्रभु (सारे जीवों के) दिलों का मालिक है, वह सदा कायम रहने वाला है, और, सब की पालना करने वाला है ।

कुदरत कीम न जाणीऐ - वडा वेपरवाह । कर बदे तू बंदगी - जिचर घट मह साह ।

अर्थः- हे भाई ! उस मालिक की कुदरत का मूल्य नहीं समझा जा सकता, वह सबसे बड़ा है उसे किसी की अधीनता नहीं । हे बँदे ! जब तक तेरे शरीर में सांस चलती है तब तक उस मालिक की बँदगी करता रह ।

तू समरथ अकथ अगोचर - जीउ पिंड तेरी रास । रहम तेरी सुख पाइआ - सदा नानक की अरदास । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 724)

अर्थः- हे प्रभु ! तू सब ताकतों का मालिक है, तेरा स्वरूप बयान नहीं किया जा सकता, ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा तुझ तक पहुँच नहीं की जा सकती । (हम जीवों का ये) शरीर और जिंद तेरी ही दी हुई पूंजी है । जिस मनुष्य पर तेरी मेहर हो उस को (तेरे दर से बँदगी का) सुख मिलता है । नानक की भी सदा तेरे दर पे यही अरदास है (कि तेरी बँदगी का सुख मिले) ।

a. सो करता चिंता करे - जिन उपाइआ जग । तिस जोहारी सुअसत तिस - तिस दीबाण अभग । नानक सचे नाम बिन - किआ टिका किआ तग । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 695)

अर्थः- जिस कर्तार ने ये सृष्टि रची है, इसकी पालना का फिक्र भी उसे ही है । जिस कर्तार ने जगत पैदा किया है, वही इनका ख्याल रखता है । मैं उसी से सदके हूँ, उसी की ही जै-जैकार करता हूँ (भाव, उसी की महिमा करता हूँ) उस प्रभ का आसरा (जीव के वास्ते) सदा अटल है । हे नानक ! उस हरि का सच्चा नाम स्मरण के बिना तिलक जनेऊ आदि धार्मिक वेष कोई मायने नहीं रखते ।

b. काहे रे मन चितवह उदम - जा आहर हरि जीउ परिआ । सैल पथर मह जंत उपाए - ता का रिजक आगै कर धरिआ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 495)

अर्थः- हे मेरे मन ! तू (उस रिजक की खातिर) क्यों सोचें सोचता रहता है जिस (रिजक को पहुँचाने के) आहर में परमात्मा स्वयं लगा हुआ है । (देख,) पहाडों के पत्थरों में (परमात्मा के) जीव पैदा किए हुए हैं उनका रिजक उसने पहले ही तैयार करके रख दिया होता है ।

c. दीनन की प्रतिपाल करै नित - संत उबार गनीमन गारै ।

अर्थः- वे सदैव दीनों का पालन करते हैं, संतों की रक्षा करते हैं और शत्रुओं का नाश करते हैं ।

पछ पसू नग नाग नराधप - सरब समै सभ को प्रतिपारै ।

अर्थः- वह हर समय सभी को धारण करता है , पशु , पक्षी , पर्वत (या वृक्ष), सर्प तथा मनुष्य (मनुष्यों के राजा) ।

पोखत है जल मै थल मै पल मै - कल के नहीं करम बिचारै।

अर्थः- वे जल तथा स्थल में रहने वाले समस्त प्राणियों का क्षण भर में पालन करते हैं तथा उनके कर्मों पर विचार नहीं करते ।

दीन दइआल दइआ निध - दोखन देखत है पर देत न हारै ।

(दसम ग्रंथ - 37)

अर्थः- दयालु प्रभु दीनों का स्वामी और दया का भण्डार उनके दोषों को देखता है, किन्तु अपनी कृपा से कभी नहीं चूकता ।

d. काम न क्रोध न लोभ न मोह - न रोग न सोग न भोग न भै है ।

अर्थः- वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, व्याधि, शोक, भोग और भय से रहित है ।

देह बिहीन सनेह सभो तन - नेह बिरकत अगेह अछै है ।

अर्थः- वह शरीरविहीन है, सबसे प्रेम करता है, किन्तु सांसारिक आसक्ति से रहित है, अजेय है और उसे पकड़ कर नहीं रखा जा सकता ।

जान को देत अजान को देत - जमीन को देत जमान को दै है ।

अर्थः- वह सभी सजीव और निर्जीव प्राणियों तथा पृथ्वी और आकाश में रहने वाले सभी लोगों को जीविका प्रदान करता है ।

काहे को डोलत है तुमरी सुध - सुंदर स्री पदमापत लैहै ।
(दसम ग्रंथ - 37)

अर्थः- हे प्राणी, तू क्यों विचलित हो रहा है ? माया का सुन्दर स्वामी तेरा ध्यान रखेगा ।

e. रोगन ते अर सोगन ते - जल जोगन ते बहु भांत बचावे ।

अर्थः- वह अनेक प्रहारों से रक्षा करता है, परन्तु कोई भी तुम्हारे शरीर को चोट नहीं पहुँचा सकता ।

सत्र अनेक चलावत घाव तऊ - तन एक न लागन पावे ।

अर्थः- शत्रु अनेक प्रहार करता है, परन्तु कोई भी तुम्हारे शरीर को क्षति नहीं पहुंचा पाता ।

राखत है अपनो कर दै कर - पाप संबूह न भेटन पावे ।

अर्थः- जब प्रभु अपने हाथों से रक्षा करते हैं, तब कोई भी पाप तुम्हारे निकट भी नहीं आता ।

और की बात कहा कह तो सो - सु पेट ही के पट बीच बचावे ।
(दसम ग्रंथ - 37)

अर्थः- मैं तुमसे और क्या कहूँ, वह तो गर्भ की झिल्लियों में भी (शिशु की) रक्षा करता है ।

f. मात गरभ मह आपन सिमरन दे - तह तुम राखनहारे ।
पावक सागर अथाह लहर मह - तारहु तारनहारे ।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 613)

अर्थः- हे (संसार समुंदर से) पार लंघा सकने की सामर्थ्य रखने वाले ! माँ के पेट में हमें अपना स्मरण दे के वहाँ हमारी रक्षा करने वाला है । (विकारों की) आग के समुंदर में गहरी लहरों में गिरे हुए को भी मुझे पार लंघा ले ।

ਙ. मारै न राखै अवर न कोइ । सरब जीआ का राखा सोइ । काहे सोच करह रे प्राणी । जप नानक प्रभ अलख विडाणी । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 286)

अर्थः- प्रभु के बिना जीवों को) ना कोई मार सकता है, ना रख सकता है, (प्रभु जितना) और कोई नहीं है, सारे जीवों का रक्षक प्रभु खुद है । हे प्राणी ! तू क्यूँ फिक्र करता है ? हे नानक ! अलख व आश्चर्यजनक प्रभु को स्मरण कर ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"